छपे हुए पृष्ठों की संख्याः 1

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय1, हैदराबाद

कार्यपत्र 1

विषयः हिन्दी कक्षाःदसवीं

पाठः10 नेताजी का चश्मा

नामः---------- अनुक्रमांकः---------- दिनांकः--------

पूर्णांकः 15 प्राप्तांकः------

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

जैसा कि कहा जा चुका है, मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची। जिसे कहते हैं बस्ट। और सुंदर थी। नेताजी सुंदर लग रहे थे।कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। फ़ौजी वर्दी में। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो---' वगैरह याद आने लगते थे।इस दृष्टि से यह सफल और सराहनीय प्रयास था।केवल एक चीज़ की कसर थी जो देखते ही खटकती थी। नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। यानी चश्मा तो था, लेकिन संगमरमर का नहीं था।एक सामान्य और सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था। हालदार साहब जब पहली बार इस कस्बे से गुज़रे और चौराहे पर पान खाने रुके तभी उन्होंने उसे लक्षित किया और उनके चेहरे पर एक कौतुकभरी मुसकान फैल गयी। वाह भई! यह आइडिया भी ठीक है। मूर्ति पत्थर की, लेकिन चश्मा रियल! **(पृष्ठ 60-61)**

प्रश्न- 1) मूर्ति को देखते ही क्या याद आने लगते थे? 2

2) हालदार साहब को क्या खटकता था? 2

3) हालदार साहब को क्या आइडिया ठीक लगा? 2

4) मूर्ति किसकी थी? 1

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 2 x 4=8

1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?
2. नेताजी की प्रतिमा किसने और किससे बनवाई थी?
3. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?
4. मूर्ति का चश्मा हर बार कौन और क्यों बदल देता था?

छपे हुए पृष्ठों की संख्याः 2

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय1, हैदराबाद

कार्यपत्र 2

विषयः हिन्दी कक्षाःदसवीं

पाठः10 नेताजी का चश्मा

नामः---------- अनुक्रमांकः---------- दिनांकः--------

पूर्णांकः 15 प्राप्तांकः------

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक)

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। दुखी हो गए। पन्द्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुज़रे। कस्बे में घुसने से पहले खयाल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा। ---- क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया। --- और कैप्टन मर गया। सोचा, आज वहाँ रुकेंगे नहीं, पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ़ देकेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ़ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ़ लपके और उसके ठीक सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं। **(पृष्ठ 63-64)**

प्रश्न- 1) कस्बे में घुसने से पहले हालदार साहब क्या सोच रहे थे? 2

2) चौराहा आते ही हालदार साहब ने ड्राइवर से जीप रोकने को क्यों कहा? 2

3) हालदार साहब की आँखें क्यों भर आईं थीं? 2

4) हालदार साहब चौराहे पर क्यों नहीं रुकना चाहते थे? 1

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए - 2 x 4=8

1. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।
2. किसी स्थान पर महापुरुषों की लगी मूर्ति के प्रति लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?
3. नगरपालिका क्या-क्या काम कराती रहती थी?
4. नेताजी का चश्मा कहानी क्या संदेश देती है?